यह मैं हूँ

मृदुला गर्ग

यह मैं हूँ

कहानी

मृदुला गर्ग

'यह क्या कर डाला आपने, कैसी रोशनी में लिया है कि तमाम चेहरे पर झुर्रियाँ ही झुर्रियाँ नज़र आ रही हैं ?' फोटो का प्रूफ़ देख कर सरल ने तल्ख़ी के साथ कहा।

'टच करने से ठीक हो जायेगा, मैडम ! यह तो प्रूफ़ है', फ़ोटोग्राफ़र ने लापरवाही से कहा।

उसे लगा, वह रोज़ न जाने कितनी औरतों से शिकायत सुनता है और यही जवाब थमा देता है। उसकी लापरवाही ने उसे और भड़का दिया।

'पूरा ठीक नहीं हुआ तो पैसे नहीं दूँगी', उसने कहा।

'ठीक है, मैडम', उसने उसी बेफ़िक्री से कहा।

यह आदमी समझता क्यों नहीं, बात कितनी अहम है। उसकी उम्र जितनी है, इस फ़ोटो में उससे दस साल ज़्यादा लग रही है, और जितनी आईने में दिखती है, उससे पन्द्रह साल ज़्यादा। जबकि इसमें और कम लगनी चाहिए थी। उसने साड़ी नहीं, अल्हड़ उम्र वाला बैल बॉटम सूट पहन कर चित्र खिंचवाया था। पत्रिका में वह पोशाक उसे इसीलिए पसन्द आयी थी क्योंकि उसके कटाव से कमसिन जवानी टपक रही थी। उसने फ़ौरन तय कर लिया था कि वह बिल्कुल वैसा लिबास बनवायेगी और पहली बार पहनने पर फ़ोटो ज़रूर खिंचवायेगी। हर नयी ड्रेस बनवाने पर वह एक चित्र अवश्य उतरवाती है। बुढ़ापा आने पर जवानी की यही यादगारें बची रहेंगी। अधिक से अधिक संख्या में उन्हें जमा करके वह बुढ़ापे को दूर ठेलने का प्रयत्न कर रही है, और यह चित्र है कि उसे बिल्कुल पास खींच लाया है। चंचल चुलबुली नवयौवना के बजाय वह लग रही है बीतते समय का एक त्रासद पल। 'पन्द्रह साल में मैं ऐसी लगा करूँगी ?' उसने डूबते हृदय से सोचा। साथ ही उससे भी भयंकर प्रश्न ने उसे झिंझोड़ दिया, 'क्या अब भी कुछ-कुछ ऐसी लगती हूँ ?' घबरा कर, उसने फ़ोटो का चेहरा अंगुली से छिपा दिया। फ़ौरन पोशाक पत्रिका वाली अल्हड़ता से भर उठी।

'आप समझते क्यों नहीं', । उसने उग्र स्वर में कहा, 'इस चित्र में मेरी उम्र दस वर्ष अधिक लग रही है।'

'मैंने कहा न, ठीक हो जायेगा', फ़ोटोग्राफ़र खीज उठा। यह औरत आम औरतों से ज़्यादा झक्की मालूम पड़ रही थी।

उसे रोना आ गया। कहीं सचमुच रो न पड़े इस डर से तस्वीर वहीं पटक बाहर निकल आयी।